Peer Reviewed Journal

ISSN 2319-8648

Impact Factor (SJIF)

Impact Factor - 7.139

Current Global Reviewer

International Peer Reviewed Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages

Special Issue 20 Vol. II
on

भारतीय समाज और विकलांग (दिव्यांग) विमर्श

Indian Society & Ideology of Disability

October 2019

Associate Editor
Dr. Shivaji Wadchkar

Guest Editor
Principal Dr. V.D. Satpute

Assistant Editor
Dr. V.B. Kulkarni
Dr. A.K. Jadhav
Dr. S.A. Tengse

www.publishjournal.co.in

Late Ramesh Warpudkar ACS College
Sonpeth Pin-431516
Ta.Sonpeth Dist.Parbhani

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue XX , Vol. II | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
October 2019 | SJIF | Impact Factor : 7.139

Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

SPECIAL ISSUE – 20 Vol II

Title of the issue **भारतीय समाज और विकलांग (दिव्यांग) विमर्श**
Indian Society & Ideology of Disability

© All rights reserved with the College & publisher Price : Rs. 400/-

PUBLISHED BY
Editor – Arun Godam
Latur

Guest Editor
Principal Dr. V.D. Satpute

Associate Editor
Dr. Shivaji Wadchkar

Assistant Editor
Dr. V.B. Kulkarni, Dr. A.K. Jadhav, Dr. S.A. Tengse

PRINTED BY
Shaurya Publication
Old MIDC , Near Kirti Gold Chowk, Latur
Email- hitechresearch11@gmail.com

EDITION :
Oct. 2019

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue XX , Vol. II	Peer Reviewed	ISSN : 2319 - 8648
Octomber 2019	SJIF	Impact Factor : 7.139

Late Ramesh Warpudkar ACS College Sonpeth Pin-431516 Ta.Sonpeth Dist.Parbhani

Index

1. भारतीय समाज और विकलांग विमर्श — 10
   डॉ. ठाकूरदास.एम.बी.
2. आपका बंटी उपन्यास में बंटी की मानसिक विकलांगता — 14
   प्रा.उषमवार जी.बी.
3. विकलांगता और आत्मविश्वास — 17
   डॉ. दत्ता शिवराम साकोळे
4. भारतीय समाज में विकलांगों की समस्याएँ — 21
   डॉ. रेविता बलभीम कावळे
5. अलका सरावगी का उपन्यास 'कोई बात नहीं' में विकलांगता एवं आत्मविश्वास — 26
   डॉ.चन्नाळे विनोद प्रभाकर,
6. विकलांग व्यक्तिचे मराठी कादंबरीतून आलेले चित्रण — 29
   प्रा. देशमुख बिभीषण
7. विकलांगो की सामाजिक स्वीकार्यता परसमाजशास्त्रीय दृष्टिकोण — 34
   धर्मेन्द्र सिंह यादव
8. विकलांग विमर्श : स्वरूप एवं अवधारणा — 39
   प्रा. डॉ. बंग नरसिंगदास ओमप्रकाश
9. अपंगाचे विश्वः वेदन आणि आत्मविश्वास — 42
   प्रा.डॉ.सा.द.सोनसळे
10. मानसिक विकलांगता : अभिशाप या समस्या — 45
    प्रा. डॉ. एकलारे चंद्रकांत नरसप्पा
11. हिन्दी चलचित्रों में दृष्टि–विकलांग विमर्श — 50
    प्रा. डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'
12. विकलंगता, महाभारत के पात्र - विचार विमर्श — 56
    प्रा. डॉ. शोभा जगन्नाथराव यशवंते
13. कथा साहित्य में विकलांग विमर्श — 59
    प्रा.डॉ.जाधव के.के.
14. हिन्दी साहित्य में विकलांग विमर्श — 62
    डॉ. सुभाष प्रल्हादराव इंगळे
15. हिंदी कथा-साहित्य में विकलांग चरित्र — 65
    डॉ.शेखर घुंगरवार
16. श्रवण कौशल का दृष्टिबाधित बालकों के लिए महत्व : — 69
    डॉ.काळे बी.एम.
17. हिंदी साहित्य : सिनेमा और विकलांग का अंतसंबंध — 72

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue XX , Vol. II
Octomber 2019

Peer Reviewed
SJIF

ISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 7.139

श्रवण कौशल का दृष्टिबाधित बालकों के लिए महत्व

डॉ.काळे बी.एम.
मराठी विभाग प्रमुख, कै.रमेश वरपुडकर म.सोनपेठ

Late Ramesh Warpudkar ACS College
Sonpeth
Pin-431516
Ta.Sonpeth Dist.Parbhani

श्रवण का अर्थ है, हवा से होकर आने वाली ध्वनी तरंगो को श्रवणेद्रिय द्वारा ग्रहण किया जाना और उसे अर्थ देना ! श्रवण कौशल का संबंध श्रवणेद्रिय से होता है ! श्रवण कौशला के अर्न्तगत श्रवण की तीक्ष्णता, श्रवण की सजगता, श्रवण द्वारा पहचानना श्रवण की गई आवाज का चुनाव करना और आवाज का बोध करना आता है !

दृष्टिबधित बालक के लिए श्रवण कौशल का जीवन मे बहुत महत्व है !यह बालक आस–पास कि वातावरण का पता लगाने के लिए श्रवणेद्रिय का प्रयोग करता है ! यह वातावरण घर, पडोस, बाजार, स्कुल आदि विभिन्न स्थानों का हो सकता है ! वातावरण मे कौंन है, क्या काम हो रहा है, किस प्रकार काम हो रहा है आदि सब जानकारीयाँ वातावरण के श्रवण कौशल द्वारा ज्ञाम होती है !

दृष्टिबाधित बालक की विभीन्न संकल्पनाएं भी श्रवण कौशल द्वारा विकसीत होते है ! शरीर के प्रति जागरूकता, वस्तु के प्रति जागरूकता, समय व दुरी की जागरूकता, समानताओं और विभिन्नताओं के प्रयत्न , वस्तु का मिलान करने के प्रत्यय, वर्गीकरण के प्रत्यय, अकारों के प्रत्यय आदि सभी प्रत्ययों में दृष्टिवाधित श्रवण कौशल का सहारा लेता है !

इसी प्रकार अनुस्थितिज्ञान और चलिष्णुता का प्रशिक्षण विकसित करने के लिए श्रवण कौशल अत्यन्त आवश्यक है ! ध्वनि के स्त्रोत, दिशा का पता लगाना, वस्तु से निकलने वाली ध्वनी के आधार पर उसकी दूरी निश्चित करना !छडी द्वारा उत्पन्न ध्वनी के आधार पर जान पाना कि सडक किस प्रकार की है समतल, ऊँची–नीची, कच्ची–पक्की आदि ! यह सब श्रवण कौशल द्वारा होता है!

दैनिक जीवन के कौशलों के प्रशिक्षण दृष्टिबाधित बालकों मे विकसीत कराना अत्यंत आवश्यक है, ताकि वे अपने जीवन मे आत्मनिर्भर बन सकें और सामुदायिक जीवन की विभिन्न गतिविधियों मे भाग से सके ! ये सब क्रियाएं श्रवण कौशल के प्रयोग किये बिना सम्भव हो ही नही सकता है !

संचार, भाष और सामाजिक अन्तःक्रिया के सोच एक पारंपारीक सम्बन्ध है ! दृष्टियाधित बालक दूसरों को बोलते हुए सुनते है, तब उनमे भाषा का विकास होता है! छन बालकों का दूसरों को सुनने और दूसरों से अन्तःक्रिया करने के जितने अधिक अवसर दिये जाएंगे, उतना ही अधिक बालक का भाषा सम्बन्धी विकास होगा ! इसके द्वारा व्यक्ती विचारों का आदान–प्रदान करता है ! दुसरोंको बोलते हुए सुनकर ही यह बालक भी अपनी भाषा का विकास करेगा ! भाषा ही सब विषयों ज्ञान–विज्ञान का मुल आधार है ! इसी मे बालक सोचता है, बोलता है, स्वप्न देखता है, पाठशाला में भिन्न–भिन्न प्रकार की शिक्षा ग्रेहण करता है! भावों की अभीव्यक्ती करता है ! यहा सब तभी संभव है ! जब बालक मे श्रवण कौशल का विकास भली प्रकार से किया जाए !

Late Ramesh Warpudkar ACS College Sonpeth Pin-431516 Ta.Sonpeth Dist.Parbhani

बहुत–सी ऐसी शैक्षिक सहायक सामग्रीयॉं तथा उपकरण है, जो लीखीत सामग्रियों को बोलकर सुनाते है ! उनका प्रयोग श्रवण कौशल प्राप्त होने पर ही किया जा सकता है !

इस प्रकार हम देखते है कि दृष्टीबाधित बालकों के भाषा विकास मे श्रवण कौशल का विकास करना अत्यन्त आवश्यक है ! इन बालको की शिक्षा , बडे होने पर व्यवसाय, सामुायिक जीवन, सभी जगहों पर इस कौशल के बिना जीवन ही अधुरा रह जाता है ! यह उन बालकों के लिए जीवनयापन का सहज माध्यम है ! अतः इस श्रवण कौशल का विकास प्रारंभिक अवस्था से ही दृष्टिबाधित बालकों में कराना चाहिए !

श्रवण कौशल को विकसीत करने के उपायः दृष्टिबाधितों मे श्रवण कौशल सूचना एकत्रित करने का महत्वपुर्ण तरीका है ! अच्छा श्रवण कौशल विकसीत करने के लिए प्रशिक्षण और अभ्यास को आवश्यकता होती है ! इस प्रशिक्षण के द्वारा दृष्टिबाधित बालकों में परिवश की विभिन्न प्रकार को ध्वनियों के प्रति जागरूकता बढाई जाती है ! वे ध्वनियों में भेद करके, अथ समझकर उस वस्तु का नाम बता सकते है, जिनसे ध्वनि उत्पन्न हो रही है ! विभिन्न ध्वनियों में से ध्वनि का चुनाव करके उस पर ध्यान केद्रित कर सकते है ! ध्वनि का दिशा पहचान कर उसके स्त्रोत, उसकी दूरी तथा स्थिति निर्धारण कर सकते है ! ध्वनि की दिशा जानकर उसके स्त्रोत की ओर जा सकते है !

श्रवण कौशल विकसीत करने के लिए निम्नलिखित उपाय किये जा सकते है :–

1. परिवार के सभी सदस्यों की आवाज की पहचान कराइये !
2. पडोस में रहनेवाले लोगों आवाज की पहचान कराइये !
3. पालतू पशु–पक्षियों की आवाज की पहचान कराइये ! अन्य पशु–पक्षियों की आवाज टेप करके सुनाइये और पहचान कराइये !
4. आवाज की दिशा की पहचान कराइये !
5. ऐसा ध्वनियो का प्रयोग कीजीए जो कम–ज्यादा हो सके ! इसके लिए रेडियो, टेपरिकॉर्डर का प्रयोग किया जा सकता है ! छात्र कम–से–कम आवाज सुनकर बताएं ! तेज आवाज कम करने के लिए कहे !
6. सडक पर जाने वाले वाहनों की आवाज सुनकर बताएं कि किस वाहन की आवाज है, किस दिशा से आ रही है ! किस वाहन कि आवाज तेज है और किसकी भारी है !
7. आवाज द्वारा दुरी की पहचान कराइये ! छात्र पास से आने वाली आवाज पहचानें और दूर से आने वाली आवाज पहचाने !विभिन्न प्रकार की आवाज करने वाले और चलने वाले खिलौनों का इस क्रिया को कराने के लिए प्रयोग कर सकते है !
8. शान्त वातावरण में होने वाली आवाज पर छात्र ध्यान दे ! घडी, पंखा आदि की आवाज पर ध्यान दिलवाइये !
9. एक कोलाहलपूर्ण वातावरण मे तरह– तरह की आवाजें पहचानें ! बाजार, सेले, अस्पताल, स्टेशन आदि स्थानो पर ले जाकर इस क्रिया को कराना चाहिए ! टपरिकॉर्डर में टेप की हुई विभिन्न स्थानो की आवाज कक्षा से सुनाकर उस पर विभीन्न प्रश्न कीजिए !

Late Ramesh W. Warpudkar ACS College Sonpeth Pin-431516 Tal. Sonpeth Dist. Parbhani

श्रवण के प्रशिक्षण के लिए अध्यपक अपनी सुझ–बुझ द्वारा तरह तरह कि कियाओं को अपना सकता है ! अध्यापक ये कियाएं दृष्टिबाधीत बालकों की आयु, दृष्टिहीनता को आयु, दृष्टि की मरत्रर आदि को ध्यान मे रखकर कराएं !

भाषा में श्रवण कौषल तिकसित करने के उपाय–भाषा की बुनियादी कुषलताअसों के अन्तर्गत सुनना, बोलना, पढना और लिखना आता है ! सुनना और पढना अर्थ ग्रहण के माध्यम है और बोलना और लिखना अभिव्यति के साधन है ! इसमें सबसे पहले श्रवण आता है ! भाषा शिक्षण मे इसका सबसे अधिक महत्त्व भी है ! श्रवण को अर्थ ग्रहण का साधन माना जाता है, अर्थात इसमें वाक्यो की हर ध्वनि को पूरा सुनना, ध्वनियों को अर्थ देना तथा वाणी के उतार–चढाव के अनुसार वाक्य–ध्वनि में भाषों की पहचान करना शामिल है सही सुनना और अर्थ ग्रहण करना एक–दूसरे के अभिन्न अंग है ! सुनने के **लिए निम्नलिखत बातों की आवश्यकता है :–**

1. स्ही सूनना !
2. धैर्यपूर्वक सुनना !
3. शब्द एवं वाक्यो का प्रसंगानुकूल अर्थ और भाव समझना !
4. कही गई बात के महत्वपूर्ण तथ्थ्यो व भावौ का चयन करना !
5. बात का सारांश निकालना !

जैसा कि अब तक जाना, भाषा शिक्षणप मे श्रवण एक महत्वपुर्ण कियास है ! इसका उद्येश्य है–दृष्टिबाधित छात्रों के कानो तक भाषा की ध्वनियों, वर्ण, पद, वाक्य को विभिन्न प्रकार से प्रस्तुत किया जाए ! इसके लिए अध्यापक निम्नलिखित बातों की ओर ध्यान दे :

अध्यापक शुध्द उच्चारण करे और छात्रो से शुध्द उच्चारण कराए दृष्टिबाधित चेहरे पर भावौ का आना देख नही पाता है ! अतः अध्यापक का दायित्व है कि वह इन बालकों को शुरू से ही शुध्द उच्चारण करने के लिए प्रेरित करे ! श्रवाण का सीधा सम्बन्ध उच्चारण का सम्बन्ध वर्तनी से है ! यदि उच्चारण अशुध्द होगा तो वर्तनसी भी अशुध्द होगी ! अतः वर्तनी को शुध्द कराने के लिए उच्चारण पर ध्यान दे !

भाषा मे उच्चारण के प्रमुखतः सिनम्नलिखित तीन क्षेत्र होते है :–

1. वर्ण– वर्ण के उच्चारण मे अध्यापक को यह जानकारी होनी चाहिए कि उच्चारण के समय जीभ क्या काम करती है–मुँह मे कहॉ छुती है, कहॉ रगड खाती है, सास का जोर किसमें कत लगता है, किसमें अधिक लगता है, गले पर दबाव कब पडता है, कब नही और नाक से निकलने वाली ध्वनि कब निकलती है! प्राथमिक कक्षाओं में ध्वनिया, स्वर, व्यंजन तथा संयुकाक्षरों की पहचान, मात्रा लगाकर बोलना तथा लिखने का सही रूप छात्रों को बनाना आवश्यक होता है !
2. शब्द– शब्दों का निर्माण वर्णो के सहयोग से होता है ! छात्रो को यह जानकारी देनी चाहिए कि शब्द किन–किन अक्षरो से बना है अर्थात शब्द की अक्षर –रचना क्या है, उसे स्पष्टता के साथ करना चाहिए ! संयुक्ताक्षरों का उच्चारण व लेखन भी श्रवण पर निर्भर होता है , वह कराना चाहिए !

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani